हिंदी भाषा सीखने के प्रतिफल

परिचय

नवीं कक्षा में दा खल होने वाले वध्यार्थी की भाषा, शैली और वचार बोध एक ऐसा आधार बन चुका होता है की अब उसे उसके भा षक डायरे के वस्तार और वैचारिक समृद् ध के लए जरूरी संसाधन मुहैया कराये जाने की आवश्यकता होती है। माध्य मक स्टार तक आते-जाते वध्यार्थी कशोर हो चुका होता है और उसमें सुनने, बोलने, पढ़ने, लखने एवं समझने के साथ-साथ आलोचनात्मक दृष्टि वक सत होने लगती है। भाषा के सौंदर्यात्मक पक्ष, कथामकता/गीतमकता, अखबारी समझ, शब्द के दूसरी शक्तियों के बीच अंतर राजनैतिक चेतना एवं समाजीक चेतना का वकास हो जाता है। वह आस-पड़ोस के भाषा और आवश्यकता के अनुसार उपयुक्त भाषा-प्रयोग, शब्दों के सू चन्तित इस्तेमाल, भाषा की नियमबद्ध प्रकृति आदि से परि चत हो जाता है। इतना ही नहीं वह व भन्न वधाओं और अ भव्यक्ति की अनेक शै लयों से भी वा कफ हो चुका होता है। अब वद्यार्थी के पढ़ाई आस-पड़ोस, राज्य-देश के सीमा को लांघते हुए वैश्विक क्षतिज तक फैल जाती है। इन बच्चों के दुनिया में समाचार, खेल, फल्म तथा अन्य कलाओं के साथ-साथ पत्र-पतरिकलाए और अलग-अलग तरह की कताबें भी प्रवेश पा चुकी होती हैं।

यह आवश्यकता है की इस स्टार पर मातृभाषा हिंदी का अध्ययन साहित्यिक, सांस्कृतिक और व्यावहारिक भाषा के रूप में कुछ इस तरह से हो क उच्चतर माध्य मक स्टार तक पहुँचते-पहुँचते यह वद्यार्थी की पहचान, आत्म वश्वास और वमर्श के भाषा बन सके। प्रयास यह भी होगा क वद्यार्थी भाषा के ल खत प्रयोग के साथ-साथ सहज और स्वाभा वक मौ खक अ भव्यक्ति में भी सक्षम हो सके। हिंदी के प्रकृति के अनुसार वर्तनी और उच्चारण के आपसी सबंध दो समझ सके, ता क उसकी ल खत और मौ खक भाषा में एक समानता एवं स्पष्टता हो।

भाषा को सीखना- सखाना

इस संधर्भ में हम यही कहेंगे क अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने ने एक माध्यम के रूप में हम भाषा को पहचानते और समझते रहे हैं, इस लए हम सब यही परिभाषा पढते हुए बड़े हुए क भाषा अ भव्यक्ति का माध्यम है; यानि भाषा के ज़रिए ही हम कुछ कहते और लखते हैं और कसी दे द्वारा कहे और लखे को सुनते और पढ़ते हैं, इस लए भाषा के चार कौशलों की बात इस तरह से प्रमुख होती चली गई क हम भूल ही गए क कहने-सुनने वाला सोचता भी है। इस संदर्भ में बरतोल्लत ब्रेख्त की कुछ पंक्तियाँ ध्यान देने योग्य हैं, जिनमें सोचने के कौशल की ओर इशारा है-"जनरल, आदमी कतना उपयोगी है, वह उड़ सकता हैं और मार सकता है। ले कन उसमें एक नुक्स है-वह सोच सकता है।" बच्चे जो कुछ देखते या सुनते हैं उसे अपनी दृष्टि और समझ से देखते-सुनते हैं, और अपनी ही दृष्टि और समझ के साथ बोलते और लखते हैं। यह दृष्टि/समझ एक परिवेश और समाज के भीतर ही बनती है, इस लए परिवेश और समाज के बीच बन रही बच्चे की समझ को उपयुक्त अ भव्यक्ति में समर्थ बनने के को शश होनी चाहिये। जब क हो यह रहा है क जब बच्चे स्कूल आते हैं तो घर की भाषा और स्कूल की भाषा के बीच एक द्वंद शुरू हो जाता है। इस द्वंद से माध्य मक स्तर के बच्चे जो क कशोरावस्था में पहुँच रहे होते हैं, को भी जूझना पड़ता है, उनके पास अनेक सवाल हैं, अपने आस-पास के समाज और संसार से। जिनका जवाब वे ढूंढ रहे हैं। अगर हमारी भाषा के कक्षा उनके सवालों और जवाबों को, उनकी अपनी भाषा दे सके तो यह इसकी सार्थकता होगी। इस लए कक्षा में भाषा-कौशलों को एक साथ जोड़कर पढ़ने-पढ़ाने की दृष्टि भी वक सत करने होगी। यह भी ध्यान रखना होगा क भाषा-कौशलों को बेहतर बनाने के लए बच्चे के परिवेश में उस भाषा के उपयुक्त सामग्री उपलब्ध हो।

खासतौर से द्‌ वतीय भाषा के रूप मीन हिन्दी पड़ने-पढ़ाने वालों के लए यह ज़रूरी होगा। भाषा पढ़ने के माहौल और प्र क्रया के अनुसार ही बच्चों में सीखने के प्रतिफल रूपी गुण जाग्रत होंगे।

द्‌ वतीय भाषा के रूप में हिंदी में निपुणता प्राप्त कने के लए आवश्यक है क हिंदी भाषा में प्रचुर मात्रा एन पाठ्यसामग्री के साथ-साथ हिंदी में लगातार रोचक अभ्यास (शक्षण-अ धगम प्र क्रया) करना-कराना। यह प्र क्रया जितनी अ धक रोचक, स क्रय एवं प्रासं गक होगी, वद्या र्थयों की भा षक उपलब्धि भी उतनी तेज़ी से बढ़ेगी। मुखर भा षक अभ्यास के लए वार्तालाप, रोचक ढंग से कहानी कहना-सुनना, घटना-वर्णन, चत्र-वर्णन, वाद- ववाद, अ भनय, भाषण प्रतियो गताएं, क वता पाठ और अंत्याक्षरी जैसी गति व धयों का सहारा लया जा सकता है, व भन्न प्रकार के श्रव्य-दृश्य - व्रत्त चत्रों और फीचर फल्मों को सीखने- सखाने की सामग्री के रूप में इस्तेमाल कया जा सकता है, जैसा क हम जानते हैं, बहुभा षकता हमारे ज्ञान-निर्माण के प्र क्रया में सकारात्मक भू मका निभाती है, मातृभाषा के व वध भाषा-कौशलों एवं ज्ञान का उंपयोग शक्षक एवं वद्यार्थी द्‌ वतीय-भाषा के रूप-में हिंदी सीखने- सखाने के लए कर सकते है,। प्रयास यह हो की वद्यार्थी अपनी मातृभाषा और परिवेशगत भाषा को साथ रखकर हिंदी भाषा-साहित्य को समझ सकें, उसका आनंद लें और अपने व्यावहारिक-जीवन में उसका उपयोग कर सकें।

पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएँ-

- वद्यार्थी अगले स्तरों पर अपनी रु च और आवश्यकता के अनुरूप हिंदी के पढ़ाई कर सकेंगे तथा हिंदी में बोलने और लखने में सक्षम हो सकेंगे।
- अपनी भाषा-दक्षता के चलये उच्चतर माध्य मक स्तर पर वज्ञान, सामाजिक वज्ञान और अन्य पाठ्यक्रमों के साथ सहज संबद्धता (अंतसरबन्ध) स्था पत कर सकेंगे।
- दैनिक व्यवहार, आवेदन पत्र लखने, अलग-अलग कस्म के पत्र/ई-मेल लखने, प्राथ मकी दर्ज कराने इत्यादि में सक्षम हो सेकेंगे।
- उच्चतर माध्य मक स्तर पर पहुँचकर, भाषा की व भन्न प्रयुक्तियों में मौजूद अंतसरबन्ध को समझ सकेंगे।
- हिंदी में दक्षता को वे अन्य भाषा-संरचनाओं के समझ वक सत करने के लए इस्तेमाल कर सकेंगे, स्थानांतरित कर सकेंगे।
- कक्षा आठवीं तक अर्जित भा षक कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लखना और चंतन) का उत्तरोत्तर वकास कराना।
- सृजनात्मक साहित्य के आलोचनात्मक आस्वाद के क्षमता का वकास हो सकेगा।
- स्वतंत्र और मौ खक रूप से अपने वचारों के अभीव्यक्ति का वकास हो सकेगा।
- साहित्य की व भन्न वधाओं के मध्य अंतसरबन्ध एवमनतर के पहचांकर सकेंगे।
- भाषा और साहित्य के रचनात्मक उपयोग के प्रति रु च उत्पन्न कर सकेंगे।
- ज्ञान के व भन्न अनुशासनों के, वकर्ष के भाषा के रूप में हिंदी के व शष्ट प्रकृति एवं क्षमता का बोध कराना।
- साहित्य के प्रभावकाजी स्कमता का उपयोग करते हुए सभी प्रकार के व वधताओं (राष्ट्रियता, धर्म, जेंडर, भाषा) के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील रवैये का वकास कराना।
- जाति, धर्म, जेंडर, राष्ट्रियता, क्षेत्र आदि से संबन्धित पूर्वाग्रहों, के चलये बनी रु डयों की भा षक अ भव्यक्तियों के प्रति सजगता एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण का वकास कर सकेंगे।

- वदेशी भाषाओं समेत व भन्न भारतीय भाषाओं के संस्कृति के व वधता से परिचय कराना।
- व्यावहारिक और दैनिक जीवन में व वध कस्म, के अ भव्यक्तियों के मौ खक व ल खत क्षमता का वकास कराना।
- संचार माध्यमों (प्रंट और इलैकट्रोनिक) में प्रयुक्त हिंदी के प्रकृति से अवगत कराना और उन्हें नए-नए तरीकों, से प्रयोग करने के क्षमता का परीचय कराना।
- अर्थपूर्ण वश्लेषण, स्वतंत्र अ भव्यक्ति और तर्क क्षमता का वकास कराना।
- भाषा के अमूर्त रूप को समझने की पूर्व-अर्जित शांतावों का उत्तरोत्तर वकास कराना।
- भाषा में मौजूद हिंसा के संरचनाओं की समझ का वकास कराना।
- मतभेद, वरोध और टकराव की परिस्थितियों में भी भाषा के संवेदनशील और तर्दपूर्ण इस्तेमाल से शांतिपूर्ण संवाद की क्षमता का वकास कराना।
- भाषा के स्मवेशी और बहुभा षक प्रकृति के प्रति एतिहा सक और सामाजिक नज़रिये का वकास कराना।
- शारीरिक और अन्य सभी प्रकार के चुनौतियों का सामना कर रहे बच्चों में भा षक क्षमताओं के वकास की उनकी अपनी व शष्ट गति और प्रतभा की पहचान कराना।
- इलैकट्रोनिक माध्यमों से जुड़ते हुए भाषा-प्रयोग की बारी कयों और सावधानियों से अवगत कराना।

कक्षा 9

सीखने- सखाने की प्र क्रया	सीखने के प्रतिफल
सभी वद्या थर्यों को समझते हुए सुननेए बोलने पढ़ने लखने और परिवेशीय सजगता को ध्यान में रखते हुए व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिए जाएँ ता क - • संगीत, लोक-कलाओं फल्म, खेल आदि की भाषा पर पाठ पढ़ने या कार्यक्रम के दौरान गौर से करने/सुनने के बाद संबं धत गति व धयाँ कक्षा में हों। वद्या थर्यों को प्रेरित कया जाए क वे आस पास की ध्वनियों और भाषा को ध्यान से सुनें और समझें। • उन्हें इस बात के अवसर मलें क वे रे डयो और टेली वज़न पर खेल, फल्म एवं संगीत तथा अन्य गति व धयों से संबं धत कार्यक्रम देखें/सुनें और उनकी भाषा, लय संचार-संप्रेषण पर चर्चा करें। • रे डयो और टेली वज़न पर राष्ट्रीय, सामाजिक चर्चाओं को सुनने/देखने और सुनाने/समझने तथा उन पर टिप्पणी करने के अवसर हों। • अपने आस-पास के लोगों की ज़रूरतों को जानने/समझने के लए उनसे साक्षात्कार और बातचीत के अवसर सुलभ हों, ऐसी गति व धयाँ पाठ्यक्रम का हिस्सा हों। • हिंदी के साथ-साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने- लखने (ब्रेल तथा अन्य संकेत भाषा में भी) और उन पर बातचीत की आज़ादी हो। • अपने अनुभवों को स्वतंत्र ढंग से लखने के अवसर हों। • अपने परिवेश, समय और समाज से संबं धत रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों। • अपनी भाषा गढ़ते हुए लखने की स्वतंत्रता हो। • स क्रय और जागरूक बनाने वाले स्त्रोत अखबार एवं पत्रिकाएँ फल्म और अन्य श्रव्य-दृश्य (ऑ डयो- वी डयो) सामग्री को देखने व सुनने पढ़ने और लखकर अ भव्यक्त करने संबंधी गति व धयाँ हों। • कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को वक सत करने वाली गति व धयों, जैसे- अ भनय, भू म का निर्वाह (रोल-प्ले), क वता पाठ, सृजनात्मक लेखन, व भन्न	वद्यार्थी- • सामाजिक मुद्दों (जेंडरभेद, जाति भेद, व भन्न प्रकार के भेद) पर कार्यक्रम सुनकर/देखकर अपनी राय व्यक्त करते हैं। जैसे- जब सब पढ़ें तो पड़ोस की मुसकान क्यों न पढ़े? या मुसकान अब पार्क में क्यों नहीं आतीघ? • अपने आस-पड़ोस के लोगोंए स्कूली सहायकों या स्कूली सा थयों की आवश्यकताओ को कह और लख पाते हैं। • पाठ्यपस्तुक के अतिरिक्त नई रचनाओं के बारे में जानने/समझने को उत्सुक हैं और उन्हें पढ़ते हैं। • अपनी पसंद की अथवा कसी सुनी हुई रचना को पुस्तकालय या अन्य स्थान से ढूँढकर पढ़ने की को शश करते हैं। • समाचारपत्र, रे डयो और टेली वज़न पर प्रसारित होने वाले व भन्न कार्यक्रमों, खेल, फल्म, साहित्य-संबंधी समीक्षाओं रिपोर्टों को दखेते, सनुते और पढ़ते हैं। • देखी-सुनी, सुनी-समझी, पढ़ी और लखी घटनाओ/ रचनाओं पर स्पष्ट तया मौ खक एवं ल खत अ भव्य कत करते हैं। • दूसरों द्वारा कही जा रही बातों को धैर्य से सुनकर उन्हें समझते हुए अपनी स्पष्ट राय व्यक्त करते हैं। • अपने अनुभवोंए भावों और दूसरों की रायए व चारों को लखने की को शश करते हैं। जैसे- आँख बंद करके यह दुनिया, व्हीलचेयर से खेल मैदान आदि । • कसी सनुी, बोली गई कहानी, क वता अथवा अन्य रचनाओं को रोचक ढंग से आगे बढ़ाते हुए लखते हैं। • सामाजि क मुद्दों पर ध्यान देते हुए पत्र, नोट लेखन इत्यादि कर पाते हैं। • पाठ्यपुस्तकों में शा मल रचनाओं के अतिरिक्त, जैसे- क वता, कहानी, एकांकी, गद्य-पद्य की अन्य वधाओं को पढ़ते- लखते हैं और क वता की ध्वनि और लय पर ध्यान देते हैं।

स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों तथा उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट (पटकथा) लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर सुलभ हों। • अपने माहौल और समाज के बारे में स्कूल तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अपनी राय देने के अवसर हों। • कक्षा में भाषा-साहित्य की विविध विषयों/विधाओं के अंतरसंबंधों को समझते हुए उनके परिवर्तनशील स्वरूप पर चर्चा हो, जैसे - आत्मकथाए जीवन, संस्मरण, कविता, कहानी, निबंध आदि। • भाषा-साहित्य के सामाजिक - सांस्कृति-सौंदर्यात्मक पक्षों पर चर्चा धविश्लेषण करने के अवसर हों। • संवेदनशील मुद्दों पर आलोचनात्मक विचार विमर्श के अवसर होंए जैसे- जाति, धर्म, रीति -रिवाज़, जेंडर आदि। • कृषि, लोक-कलाओं, हस्त-कलाओं लघु-उद्योगों को दखेने और जानने के अवसर हों और उनसे संबंधित शब्दावली को जानने और उनके उपयोग के अवसर हों। • कहानी, कविता, निबंध आदि विधाओ में व्याकरण के विविधि प्रयोगों तथा उपागमों पर चर्चा के अवसर हों। • विद्यार्थी को अपनी विभिन्न भाषाओं के व्याकरण से तलुना/समानता देखने के अवसर हों। • रचनात्मक-लेखन, पत्र-लेखन, टिप्पणी, निबंध, अनुच्छेद आदि लिखने के अवसर हों।	• संगीतए फिल्म, विज्ञापनों खेल आदि की भाषा पर ध्यान देते हैं। जैसे- उपर्युक्त विषयों की समीक्षा करते हुए उनमें प्रयुक्त रजिस्टरों का उपयोग करते हैं। • भाषा-साहित्य की बारीकियों पर चर्चा करते हुए जसै कुछ विशिष्ट शब्द-भंडार, वाक्य-संरचनाए शैली संरचनाए मौलिकता आदि । • लअपने आस-पास के रोज़ाना बदलते पर्यावरण पर ध्यान देते हैं तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए सचेत होते हैं। जैसेक- कल तक यहाँ पेड़ था, अब यहाँ इमारत बनने लगी। • अपने साथियों की भाषा, उनके विचार, व्यवहार, खान-पान, पहनावा संबंधी जिज्ञासा को कहकर और लिखकर व्यक्त करते हैं। • हस्त कलाए वास्तुकलाए खेतीबाड़ी के प्रति अपनी रुचि व्यक्त करते हैं तथा इनमें प्रयुक्त होने वाली भाषा को जानने की उत्सुकता रखते हैं। • जाति, धर्म, रीति -रिवाज़, जेंडर आदि मुद्दों पर प्रश्न करते हैं। • अपने परिवेश की समस्याओं पर प्रश्न तथा साथियों से बातचीत/चर्चा करते हैं। • सभी विद्यार्थी अपनी भाषाओं की संरचना से हिंदी की समानता और अंतर को समझते हैं।

कक्षा **10**

सीखने- सखाने की प्र क्रया	सीखने के प्रतिफल
सभी वद्या थयों को समझते हुए सुननेए बोलने पढ़ने लखने और परिवेशीय सजगता को ध्यान में रखते हुए व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिए जाएँ ता क - • संगीत, लोक-कलाओं फल्म, खेल आदि की भाषा पर पाठ पढ़ने या कार्यक्रम के दौरान गौर से करने/सुनने के बाद संबं धत गति व धयाँ कक्षा में हों। वद्या थयों को प्रेरित कया जाए क वे आस पास की ध्वनियों और भाषा को ध्यान से सुनें और समझें। • उन्हें इस बात के अवसर मलें क वे रे डयो और टेली वज़न पर खेल, फल्म एवं संगीत तथा अन्य गति व धयों से संबं धत कार्यक्रम देखें/सुनें और उनकी भाषा, लय संचार-संप्रेषण पर चर्चा करें। • रे डयो और टेली वज़न पर राष्ट्रीय, सामाजिक चर्चाओं को सुनने/देखने और सुनाने/समझने तथा उन पर टिप्पणी करने के अवसर हों। • अपने आस-पास के लोगों की ज़रूरतों को जानने के लए उनसे साक्षात्कार और बातचीत के अवसर सुलभ हों, ऐसी गति व धयाँ पाठ्यक्रम का हिस्सा हों। • हिंदी के साथ-साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने- लखने (ब्रेल तथा अन्य संकेत भाषा में भी) और उन पर बातचीत की आज़ादी हो। • अपने अनुभवों को स्वतंत्र ढंग से लखने के अवसर हों। • अपने परिवेश, समय और समाज से संबं धत रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों। • अपनी भाषा गढ़ते हुए लखने की स्वतंत्रता हो। • स क्रय और जागरूक बनाने वाले स्त्रोत अखबार एवं पत्रिकाएँ .फल्म और अन्य दृश्य-श्रव्य सामग्री को देखने व सुनने पढ़ने और लखकर अ भव्यक्त करने संबंधी गति व धयाँ हों। • कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को वक सत करने वाली गति व धयों, जैसे- अ भनय, भू म का निर्वाह (रोल-प्ले), क वता पाठ, सृजनात्मक लेखन, व भन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों तथा उनकी	वद्यार्थी- • अपने परिवेशगत अनुभवों पर अपनी स्वतंत्र और स्पष्ट राय मौ खक एवं ल खत रूप में व् यक्त करते हैं। जैसेक- मुसकान आजकल चुप क्यों रहती हैघ् मुसकान को स्कूल में हम लाएँगे। • अपने आस-पास और स्कूली सा थयों की ज़रूरतों को अपनी भाषा में अ भ व् यक्त करते हैं। जैसे- भाषण या वाद ववाद में इन पर चर्चा करते हैं। • आँखों से न देख सकने वाले साथी की ज़रूरत की पाठ्यसामग्री को उपलब्ध कराने के संबंध में पुस्तकालयाध्यक्ष से बोलकर और लखकर निवेदन करते हैं। • न बोल सकने वाले साथी की बात को समझकर अपने शब्दों में बताते हैं। • नई रचनाएँ पढ़कर उन पर परिवार एवं सा थयों से बातचीत करते हैं। • रे डयो, टी.वी. या पत्र-पत्रिकाओं व अन्य श्रव्य-दृश्य संचार माध्यमों से प्रसारित, प्रका शत रूप को कथा साहित्य एवं रचनाओं पर मौ खक एवं ल खत टिप्पणी/वश्लेषण करते हैं। • पत्रिका पर प्रसारित/प्रका शत व भन्न पुस्तकों की समीक्षा पर अपनी टिप्पणी देते हुए वश्लेषण करते हैं। • अपने अनभुवों एवं कल्पनाओ को सजृनात्मक ढंग से लखते हैं। जैसेक- कोई यात्रा वर्णन, संस्मरण लखना। • क वता या कहानी की पुनर्रचना कर पाते हैं। जैसे- कसी च र्चत क वता में कुछ पंक्तियाँ जोड़कर नई रचना बनाते हैं। • औपचारिक पत्र, जैसे- प्रधानाचार्य, संपादक को अपने आस-पास की समस्याओं/मुद्दों को ध्यान में रखकर पत्र लखते हैं। • रोज़मर्रा के जीवन से अलग कसी घटना/स्थिति - वशेष में भाषा का काल्पन क और सृजनात्मक प्रयोग

तैयारी से संबं धत स्क्रिप्ट (पटकथा) लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर सुलभ हों। • अपने माहौल और समाज के बारे में स्कूल तथा व भन्न पत्र-पत्रिकाओं में अपनी राय देने के अवसर हों। • कक्षा में भाषा-साहित्य की व वध छ वयों/ वधाओं के अंतरसंबंधों को समझते हुए उनके परिवर्तनशील स्वरूप पर चर्चा हो, जैसे - आत्मकथाए जीवन, संस्मरण, क वता, कहानी, निबंध आदि। • भाषा-साहित्य के सामाजिक - सांस्कृति-सौंदर्यात्मक पक्षों पर चर्चा ध वश्ले षण करने के अवसर हों। • संवेदनशील मुद्दों पर आलोचनात् मक वचार वमर्श के अवसर होंए जैसे- जाति, धर्म, रीति -रिवाज़, जेंडर आदि। • कृ ष, लोक-कलाओं, हस्त-कलाओं लघु-उद्योगों को दखेने और जानने के अवसर हों और उनसे संबं धत शब्दावली को जानने और उनके उपयोग के अवसर हों। • कहानी, क वता, निबंध आदि वधाओ में व्याकरण के वविधि प्रयोगों तथा उपागमों पर चर्चा के अवसर हों। • वद्यार्थी को अपनी व भन्न भाषाओं के व्याकरण से तलुना/समानता देखने के अवसर हों। • रचनात्मक लेखनए पत्र-लेखनए टिप्पण, अनच्छेद- गद्य-पद्य के सभी रूपों में, निबंध, यात्रा वृतांत आदि लखने के अवसर हों। • उपलब्ध सामग्री एवं भाषा में व्य करण के मौ लक प्रयोग की चर्चा एवं वश्लेषण के अवसर हों। • दैनिक जीवन मे भाषा के उपयोग के व वध प्रकार एवं परिवेशगत/अनुभव-आधारित-रचनात्मक लेखन के अवसर उपलब्ध हों।	करते हुए लखते हैं। जैसे- दिन में रात, बिना बोले एक दिन, बिना आँखों के एक दिन आदि। • पाठ्यपस्तुकों में शा मल रचनाओं के अतिरिक्त अन्य क वता, कहानी, एकांकी को पढ़ते- लखते और मंचन करते हैं। • भाषा-साहित्य की बारीकयों पर चर्चा करते हैं, जैसे क- व शष्ट शब्द-भंडार, वाक्य-संरचना, शैली के प्रयो गक प्रयोग एवं संरचना आदि । • व वध साहित्यिक वधाओं के अंतर को समझते हुए उनके स्वरूप का वश्लेषण निरूपण करते हैं। • व भन्न साहित्यिक वधाओं को पढ़ते हुए व्याकर णक संरचनाओं पर चर्चा/टिप्पणी करते हैं। • प्राकृतिक एवं सामाजिक मद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रति क्रया को बोलकर/ लखकर व्यक्त करते हैं। • फल्म एवं वज्ञापनों को देखकर उनकी समीक्षा लखते हुए। • दृश्य माध्यम की भाषा का प्रयोग करते हैं। • परिवेशगत भाषा प्रयोगों पर प्रश्न करते हैं। जैसे- रेलवे स्टेशन/एयरपोर्ट/बस स्टैंड, ट्रक, ऑटोरिक्शा पर लखी कई भाषाओं में एक ही तरह की बातों पर ध्यान देंगे। • अपने परिवेश को बेहतर बनाने की को श श में सृजनात्मक लेखन करते हैं। जैसे- क्या-क्या रिसाइक लंग कर सकते हैं, और पेड़ों को कैसे बचाएँ। • हस्त कलाए वास्तुकला, खेती-बाड़ी के प्रति अपना रुझान व्यक्त करते हैं तथा इनमें प्रयुक्त कलात्मक संदर्भों/भा षक प्रयोगों को अपनी भाषा में जोड़कर बोलते- लखते हैं।

समावेशी शक्षण व्यवस्था के लए कुछ सुझाव

कक्षा में सभी बच्चों के लए पाठ्यचर्या समान रहती है एवं कक्षा-गति व धयों में सभी बच्चों की प्रतिभा गता होनी चाहिए। व शष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के लए पाठ्यचर्या में कई बार रूपान्तरों की आवश्यकता होती है। दिए गए सीखने के प्रतिफल समावेशी शक्षण व्यवस्था के लए हैं, परंतु कक्षा में ऐसे भी बच्चे होते हैं जिनकी कुछ वशेष आवश्यकताएँ होती है, जैसे-दृष्टि-बा धत, श्रव्य-बा धत इत्यादि । उन्हें अति रिक्त सहयोग की आवश्यकता होती है। उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शक्षकों के लए निम्न ल खत सुझाव प्रस्ता वत हैं-

- अध्यापक द्वारा व भन्न प्रारूपों (जैसेक- पत्र लेखन, आवेदन आदि) को मौ खक रूप से समझाया जा सकता है।
- वद्या र्थयों को बोलकर पढ़ने के लए प्रेरित कया जाना चाहिए।
- अध्यापक बातचीत के माध्यम से कक्षा में संप्रेषण कौशल को बढ़ा सकते हैं।
- नए शब्दों की जानकारी ब्रेल ल प में अर्थ सहित दी जानी चाहिए।
- दैनिक गति व धयों का मौ खक अर्थपूर्ण भा षक अभ्यास।
- शब्दों का वस्तृत उच्चारणगत हो, जैसे - मनट, वशाल, समुद्र, छोटे जीव तथा कीट इत्यादि।
- प्रश्नों का निर्माण करना और बच्चों को उत्तर देने के लए प्रोत्साहित करना। साथ ही बच्चों को भी प्रश्न-निर्माण करने को कहना और स्वयं उनका उत्तर तलाश करने के लए कहना।
- उच्चारण सुधारने के लए ऑ डयो सामग्री का प्रयोग और कहानी सुनाना। अलग-अलग तरह की आवाज़ों की रिकॉ डंग करकेए जैसे- झरना, हवा, लहरें, तूफ़ान, जानवर और परिवहन, ता क उनके माध्यम से संकल्पना/धारणा/ वचार को समझाया जा सके।
- वद्या र्थयों को एक - दूसरे से बातचीत के लए प्रेरित करना।
- अ भनय, नाटक और भू म का-निर्वाह (रोल-प्ले) का प्रयोग करने के लए प्रेरणा देना।
- पढ़ाए जाने वाले वषय पर दृश्य-शब्द कोश की शीट तैयार की जाए जैसे- शब्दों को चत्रों के माध्यम से दिखाया/बताया जाए।
- बोर्ड पर नए शब्दों को लखना। यदि उपलब्ध हो तो शब्द कोश के शब्दों को चत्र के माध्यम से प्रयोग कया जाए।
- नए शब्दों को बच्चों के रोज़मर्रा के जीवन में इस्तेमाल करना और व भन्न प्रसंगों में उनका प्रयोग करना।
- शीर्षक और ववरण के साथ दृश्यात्मक तरीके से कक्षा में शब्दों का प्रयोग करना।
- स्पष्ट रूप से समझाने के लए फुटनोट को उदाहरण के साथ लखना।
- संप्रेषण के व भन्न तरीकों (जैसेकृ मौ खक एवं अमौ खक ग्रा फक्स, कार्टून्स (बोलते हुए गुब्बारे), चत्रों, संकेतों, ठोस वस्तुएँ एवं उदाहरण) का प्रयोग करना।
- ल खत सामग्री को छोटे-छोटे एवं सरल वाक्यों में तोड़नाए सं क्षप्त करना तथा लेखन को व्यवस्थित करना।
- बच्चों को इस योग्य बनाना क वे रोज़मर्रा की घटनाओं को साधारण ढंग से डायरी, वार्तालाप, जर्नल, पत्रिका इत्यादि के रूप में लख सकें ।
- वाक्यों की बनावट पर आधारित अभ्यासों को बार-बार देना, ता क बच्चा शब्दों एवं वाक्यों के प्रयोग को ठीक ढंग से सीख सके । चत्रों/समाचारों/समसामयिक घटनाओं से उदाहरणों का प्रयोग करें।
- बच्चों के स्तर के अनुसार उन्हें पाठ्य-सामग्री तथा संसाधन प्रदान करना।
- पाठ में आए मुख्य शब्दों पर आधारित तरह-तरह के अनुभवों को देना।

- कलर को डंग (Color Coding) प्रयोग करना (जैसे- स्वर एवं व्यंजन के लए अलग-अलग रंगों का प्रयोग), कांसेप्ट मैप (Color map) तैयार करना।
- प्रस्तुति करण के लए व भन्न शैली एवं तरीकों, जैसे- दृश्य, श्रव्य, प्रायो गक शक्षण इत्यादि का प्रयोग।
- अनुच्छेदों को सरल बनाने के लए उनकी जटिलता को कम कया जाए।
- सामग्री को और अ धक आकर्षक बनाने के लए भन्न- भन्न व चारों, नए शब्दों के
- प्रयोग, कार्डस, हाथ की कठपुतली, वास्त वक जीवन के अनुभवों, कहानी प्रस्तुतिकरण, वास्त वक वस्तु एवं पूरक सामग्री का प्रयोग कया जा सकता है।
- अच्छी समझ के लए ज़रूरी है क वषय से संबं धत पृष्ठभू म के बारे में पूर्व ज्ञान से जोड़ते हुए नई सूचना दी जाए।
- क वताओं का पठन, सम चुत भावा भव्यक्ति/अ भनय/गायन के साथ कया जाए।
- पाठों के परिचय एवं परीक्षण खंड अथवा आकलन में व भन्न समूहों के लए व भन्न प्रकार के प्रश्नों की रचना की जा सकती है।
- पठन-कार्य को अच्छा बनाने के लए दो-दो बच्चों के समूह द्वारा पाठ्यसामग्री को प्रस्तुत करवाया जाए।
- कठिन शब्दों के लए शब्दों के अर्थ या पर्यायवाची उन शब्दों के साथ ही कोष्ठक में लखे जाएँ। जिन शब्दों की व्याख्या ज़रूरी हो उन्हें व्याख्यायित कया जाए तथा सारांश को रेखां कत कया जाए।

सीखने के प्रतिफल-कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु

- सीखने के प्रतिफल सीखने- सखाने की प्र क्रया के दौरान शक्षकों तथा बच्चों को सखाने में मदद करने वाले सभी लोगों की सु वधा के लए वक सत कए गए हैं।
- माध्य मक स्तर (9-10) पर सीखने- सखाने की प्र क्रया और माहौल में वशेष अंतर नहीं कया गया है। यद्य प भाषा सीखने- सखाने के वकासात्मक स्तर में अंतर हो सकता है।
- भाषा सीखने के प्रतिफलों को ठीक ढंग से उपयोग करने के लए, दस्तावेज़ में प्रारं भक पृष्ठभू म दी गई है। इसे पढ़े, यह बच्चों की प्रगति को सही ढंग से समझने में मदद करेगी।
- इसमें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के आधार पर वक सत पाठ्यक्रम में नवीं और दसवीं कक्षाओं के लए हिंदी शक्षण के उद्देश्यों को दृष्टि में रखते हुए पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएँ दी गई हैं।
- इन पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाओं को वद्यार्थी तभी हा सल कर सकता है, जब सीखने के तरीके और कक्षा में अनुकूल माहौल हो।
- यद्य प हमारी को शश यही रही है क कक्षावार प्रतिफलों को दिया जाए, ले कन भाषा की कक्षा में सीखने के व भन्न चरणों को देखते हुए इस प्रकार का बारीक अंतर कर पाना मुश्किल हो जाता है।
- सीखने के प्रति फल बच्चे के मनोवैज्ञानिक धरातल को ध्यान में रखते हुए, सीखने की प्र क्रया के सभी अ धगमानुकूल तथ्यों व आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार कए गए हैं।
- ये प्रतिफल सीखने- सखा ने की प्र क्रया के दौरान सतत और समग्र आकलन में भी आपकी मदद करेंगे, क्यों क सीखने- सखाने की प्र क्रया के दौरान ही बच्चे को लगातार फ़ीडबैक (प्रतिपुष्टि) भी मलता जाएगा।
- इन प्रतिफलों की अच्छी समझ बनाने के लए पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम को पढ़ना-समझना बेहद ज़रूरी है।

- ये प्रतिफल वद्यार्थी की योग्य ताए कौशल, मूल्य, दृष्टिकोण तथा उसकी व्यक्तिगत और सामाजिक वशषेताओं से जुड़े हुए हैं। आप देखेंगे क वद्यार्थी की आयु, स्तर और परिवेश की व भन्नताओं के अनुसार प्रतिफलों के सद्धांत परिणाम में भी बदलाव आता है।
- समावेशी कक्षा को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम की अपेक्षाओं सीखने के तरीके और माहौल तथा प्रतिफलों के वकास में सभी तरह के बच्चों को ध्यान में रखा गया है।
- अलग-अलग शक्षार्थी-समूहों एवं भाषायी परिवेश के अनुसार उल्लि खत एक ही प्रतिफल का अलग-अलग स्तर संभव है, जैसे- लखने-पढ़ने या राय व्यक्त करने की दक्षता के अनुसार संबं धत प्रतिफलों का व वध स्तर हो सकता है।
- इस दस्तावेज़ में चह्नित कए गए प्रतिफलों के अतिरिक्त -प्रतिफलों की ओर भी अध्यापकों का ध्यान जाना चाहिए।